

SHRI BIRKHA BAHADUR SUBBA MURINGLA

Shri Birkha Bahadur Subba Muringla is a multi-faceted personality, has single-handedly developed Limboo language into its modern form. As a writer and poet of Nepali language, he has been recognized as a great contributor to Nepali literature, especially for the numerous Children poems he has written. He had served the Human Resources Development department of Sikkim, from the post of Limboo Text Book Writer to the elevated responsibility as an Additional Director.

2. Born on April 03, 1943, to the family of Late Lallman Subba and Late Sancha Rani Subba, Shri Muringla completed his Bachelor's Degree from Darjeeling, where he learnt music, literary writing, social works and so on. Before joining his government job, he got himself involved in politics, that aimed at social upliftment and democracy.

3. He was instrumental in preparing all Limboo text books from pre-primary to class XII. As a singer, he has the distinction of being the first from Sikkim to record two songs from HMV, Kolkata in 1962.

4. As a writer, he has to his credit numerous Limboo books and articles, along with large number of Nepali poems, essays and songs. And as a singer, he has a couple of limbo° musical albums, composed and sung by himself, while he also has an album of Linabbo devotional songs as his creation. A Limboo Assembly prayer by him is being sung all over the state, in schools. Now, enjoying his retired life at his birthplace, Shri Muringla has been a source of History, Music and Literature for enormous students from different parts of the state as well as from foreign countries.

5. Shri Muringla is the recipient of many awards and honours. The important awards received by him are Bhanu puraskar, (2016); Bhasa Sevashri Samman (2015); Bali Hang Puraskar, from Kathmandu in 2008; VKIC Samman, Guwahati (2014.): Udai Kala Nepal (1999); and many others.



श्री बिर्ख बहादुर सुब्बा मुरिङला

श्री बिर्ख बहादुर सुब्बा मुरिङला एक बहुमुखी प्रतिभा संपन्न व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने अकेले ही लिम्बू भाषा को आधुनिक रूप में विकसित करने का कार्य किया है। नेपाली भाषा के एक लेखक एवं कवि के रूप में आपको नेपाली साहित्य, विशेषकर आपके द्वारा रची गयी अनेक बाल कविताओं के प्रति किए गए आपके शानदार योगदान के लिए जाना जाता है। आपने लिम्बू पाठ्य पुस्तक-लेखक के पद से लेकर अपर निदेशक तक के गुरूतर दायित्व को निभाने में सिक्किम के मानव संसाधन विकास विभाग को अपनी सेवाएं अर्पित की हैं।

2. आपका जन्म 03 अप्रैल, 1943 को स्व. लालमैन सुब्बा एवं स्व. सांचा रानी सुब्बा के परिवार में हुआ था। आपने दार्जिलिंग से स्नातक की उपाधि प्राप्त की जहां पर आपने संगीत, साहित्य लेखन, सामाजिक कार्य और ऐसी ही और कई अन्य विद्याएं सीखीं। सरकारी नौकरी में जाने के पहले आपने स्वयं को राजनीति में संलिप्त रखा जिसका उद्देश्य सामाजिक उत्थान एवं लोकतंत्र के लिए था।

3. पूर्व-प्राथमिक से लेकर कक्षा – 12वीं तक समस्त लिम्बू पाठ्य पुस्तकों को तैयार करने में आप मुख्य कर्ता-धर्ता थे। एक गायक के रूप में आपको वर्ष 1962 में एच एम वी, कोलकाता से दो गाने रिकॉर्ड कराने वाले सिक्किम के प्रथम व्यक्ति होने का गौरव प्राप्त है।

4. एक लेखक के रूप में, आपको बड़ी संख्या में नेपाली कविताएं, निबंध और गीतों के साथ-साथ अनेक लिम्बू पुस्तकों एवं लेखों के योगदान का गौरव प्राप्त है और एक गायक के रूप में, आपके पास कुछेक लिम्बू संगीत एल्बम हैं, जिन्हें आपने स्वयं रचा और गाया है। आपकी रचनाओं के खजाने में एक कृति के रूप में लिम्बू भक्तिमय गीतों का एक एल्बम भी है। आपके द्वारा रचित एक लिम्बू असेम्बली प्रेयर पूरे राज्य के विद्यालयों में गायी जा रही है। इस समय अपने जन्म स्थान पर अपनी सेवानिवृत्ति के जीवन का आनन्द लेते हुए आप राज्य के विभिन्न हिस्सों के साथ-साथ विदेशों से आए बड़ी संख्या में छात्रों के लिए इतिहास, संगीत एवं साहित्य के स्रोत बने हुए हैं।

5. आपको कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। आपको मिले महत्वपूर्ण पुरस्कारों में भानु पुरस्कार (2016); भाषा सेवाश्री सम्मान (2015); वर्ष 2008 में काठमांडू से प्राप्त बाली हैंग पुरस्कार; वी के आई सी सम्मान, गुवाहाटी (2014): उदय कला पुरस्कार, धारण, नेपाल (1999) तथा कई अन्य पुरस्कार शामिल हैं।